

## द्रव्य मन—भाव मन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्म विज्ञान का कार्यक्रम व्यक्ति सुधार का कार्यक्रम है। मानव को सुधारने से सृष्टि अपने आप सुधार जाती है। कर्म का अर्थ है कार्य करना। हिलना, डुलना, खाना, पीना, चलना, उठना, बैठना कर्म के अन्तर्गत आते हैं। मनुष्य प्रतिक्षण कार्य करता रहता है। सो जाने के बाद भी उसका मन इधर—उधर दौड़ता रहता है। बिना कर्म किये मनुष्य एक क्षण भी नहीं रह सकता। कर्म करने में मनुष्य स्वतंत्र है किन्तु फल प्राप्त करने में वह स्वतंत्र नहीं है। फल ईश्वराधीन है। मनुष्य जन्म—जन्मांतर से कर्म कर रहा है और करता रहेगा। जीवात्मा कर्म करने के लिए है। एक गति से दूसरी गति में आत्मा अन्तराल गति से जाती है। राग—द्वेष, पुण्य—पाप, ज्ञान—अज्ञान के साथ शरीर के माध्यम से दूसरे शरीर में जाती है। आत्मा ज्ञाता दृष्टा है। तेजस शरीर के माध्यम से यह गति करता है। शुद्ध मन द्रव्य मन है और राग—द्वेष, सुख—दुःख, हर्ष—विषाद से संयुक्त मन भाव मन है। जब भाव पवित्र होते हैं तो मन भी पवित्र रहता है। जब भाव विकृत बनते हैं तो मन में भी बुराई आ जाती है।

चेतना का अर्थ है— चेतन परमाणुओं का पिण्ड। इस विश्व में चेतन और मन दो पदार्थ हैं। जड़ कभी चेतन नहीं बन सकता और चेतन कभी जड़ नहीं बन सकता। जड़ और चेतन के गुण अलग—अलग हैं। चेतन पदार्थ में हलन, चलन और गमन की क्रिया होती है किन्तु जड़ पदार्थ में यह क्रियाएं नहीं होती। जड़ पदार्थ रूप, रस, गन्ध, स्पर्श वाला होता है। जैनदर्शन में इसे पुद्गल कहा जाता है। सोचना, विचारना मन का कार्य होता है। चेतना की शक्ति को चित्त कहते हैं। शरीर में चेतना आत्मा के द्वारा आती है। चित्त और मन दोनों अलग—अलग हैं।

अन्तःकरण को चार भागों में विभक्त किया गया है— मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। मनस्त्व इन्द्रियों द्वारा उद्भूत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श तथा शब्दमयी ज्ञान सामग्रियों की गतिविधि तथा हेयत्व और उपादेयत्व की विवेचना करना है। संसार का कोई पदार्थ ऐसा वेगवान नहीं है।

चेतना ही मन का द्रष्टा है। चेतना ही शरीर, इन्द्रिय, मन, तथा बुद्धि की द्रष्टा है। चेतना तो केवल निरीक्षण करती है। वह मन के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर पाती। मन स्वयं जड़ है, इसका विकास क्रमिक और वातावरण सापेक्ष है। आत्मा ही मन की चालक सत्ता है। वह इसे गति प्रदान करती है।

मन का प्राण आत्मतत्त्व ही है। यह आत्मा ही देखने सुनने वाला, छूने वाला, विचार करने वाला, जानने वाला, क्रिया करने वाला विज्ञान युक्त है। यह मन ही मनुष्य के मोक्ष और बन्धन दोनों का साधन है। बाह्य अवयवों की समता होने पर भी मनुष्य असाधारण मन के कारण ही असामान्य बन जाता है। मन की प्रायः अवस्था तीन प्रकार की होती है। पहली अन्धकारमय अवस्था जिसमें मन की स्थिति जड़ निष्क्रिय जैसी बन जाती है। यह अन्धकारमय स्थिति है। तमोगुण के कारण हम इस अवस्था को प्राप्त होते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्तम विचार करना नहीं जानते। मन की दूसरी अवस्था राजसिक अवस्था है। ऐसा व्यक्ति दौड़ धूप करता है और अपना प्रभुत्व दूसरों पर जमाता है। बलवान बनने की महत्वाकाँक्षा उसके मन में आरुढ़ रहती है। मन की तीसरी अवस्था अत्यन्त उज्ज्वल एवं पवित्र है। यह सर्वोच्च भूमिका शनैः शनैः अभ्यास से प्राप्त होती है। इसे तुरीयावस्था कहते हैं। धीरे-धीरे मन के द्रष्टा बनने से तुरीयावस्था में प्रवेश होता है। इसी अभ्यास से हम राजयोग की सर्वोच्च समाधि प्राप्त करते हैं। मन की तीन भूमियाँ होती हैं—स्मृति, जागृति तथा धृति। स्मृति भूमि में मानव लोक के ज्ञान तथा अनुभव की खोज की वह दुर्लभ मंजूषा रहती है, जिसे जागृत मन ने अतीत काल में प्राप्त किया था। जागृति में मन ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा केवल हृदय जगत से सन्नद्ध रहता है।

मन का अगला आयाम चित्त कहलाता है। चित्त का समबन्ध अभौतिक आयाम से है। चित्त मन का सबसे भीतरी आयाम है, जिसका संबंध उस चीज से है जिसे हम चेतना कहते हैं। अगर आपका मन सचेतन हो गया, अगर आपने चित्त पर एक खास स्तर का सचेतन नियंत्रण पा लिया, तो आपकी पहुंच अपनी चेतना तक हो जाएगी। हम लोग जिसे चेतना कह रहे हैं, वो वह आयाम है, जो न तो भौतिक है और न ही विद्युतीय और न ही यह विद्युत चुंबकीय है। यह भौतिक आयाम से अभौतिक आयाम की ओर एक बहुत बड़ा परिवर्तन है। यह अभौतिक ही है, जिसकी गोद में भौतिक घटित हो रहा है। भौतिक तो एक छोटी सी घटना है। चित्त मन

के सोलह आयामों में से एक है। यह हमारे भीतर मौजूद प्रज्ञा का आयाम है, जो एक तरीके से हमारे निर्माण का आधार है। मन के ये आयाम पूरी तरह से मस्तिष्क में स्थित नहीं होते, ये पूरे सिस्टम में होते हैं। ये आठ तरह की स्मृतियां, बुद्धि के ये पांच आयाम और अहंकार यानी पहचान के दो आयाम व चित्त कुल मिलाकर मन के सोलह हिस्से होते हैं। चित्त चूंकि असीमित होता है, इसलिए यह सिर्फ एक ही होता है। मन की तीन अवस्थाएँ हैं— विक्षेप, एकाग्रता और स्थिरता। विक्षेप की अवस्था में स्मृतियों, कल्पनाओं और विचारों का सतत विचरण होता रहता है। एकाग्रता में मन एक कल्पना या विचार पर स्थिर रहता है और तीसरी अवस्था स्थिरता में मन अमन हो जाता है। भाव मन निर्विकार है और द्रव्य मन संसार में विचरण करने वाला है।